सितंबर 2023 मूल्य : ₹ 50

पखेरू

सृजन की उड़ान

वर्ष : 15, अंक-12, सितंबर 2023

इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसायटी
बी-107, सेक्टर-63, नोएडा-201309
गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0120-4330755
editor@pakhi.in
pankaj.sharma@pakhi.in
pakhimagazine@gmail.com
www.facebook.com/pakhimagazine
Web portal : www.pakhi.in

प्रति : रु. 50.00
वार्षिक, रजिस्टर्ड डाक सहित : रु. 1000.00
आजीवन, रजिस्टर्ड डाक सहित : रु. 10000.00

भुगतान इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी के नाम से किया जाए।
भुगतान ऑनलाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं :
बैंक : UNION BANK
खाता संख्या : 520101255568785
IFSC : UBIN **0905011**
बैंक शाखा : जी-28, सेक्टर-18, नोएडा-201301
उत्तर प्रदेश

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय। स्वामित्व इंडिपेंडेंट मीडिया इनिशिएटिव सोसाइटी के लिए प्रकाशक, मुद्रक नारायण सिंह राणा द्वारा चार दिशाएं प्रिंटर्स प्रा.लि. जी-39, नोएडा से मुद्रित एवं बी-107, सेक्टर 63, नोएडा से प्रकाशित।

*कार्यकारी संपादक पूर्णतः अवैतनिक

संपादक
अपूर्व

कार्यकारी संपादक*
पंकज शर्मा

महाप्रबंधक
अमित कुमार

शब्द संयोजन
उषा ठाकुर

अनुक्रमणिका

संपादकीय/अपूर्व ...कृपया सीट बेल्ट बांध लें 3

मतभेद

बौखलाहट की घनीभूत... : मदन कश्यप 5

खंड-1 : कहानियां

वापसी : दामोदर दत्त दीक्षित 6
हिसाब बराबर : इंदिरा दांगी 11
इट स्मेल्स हैपीनेस... : अणु शक्ति सिंह 16
तलाशने पर भी नहीं... : किंशुक गुप्ता 20

खंड-2 : लंबी कहानी/बीज : कहानी

मुक्ति : रामशरण जोशी 24
आत्महत्या : तान्या लांबा 34
एमएमएस उर्फ माया... : संजीव श्रीवास्तव 37

उपन्यास (सातवीं किस्त)

सूर्यावर्त : पल्लवी प्रसाद 42

खंड-3 : कविताएं

सविता सिंह की पांच कविताएं 46
रमाकांत दामया की छह कविताएं 49
अनवर शमीम की चार कविताएं 51
उमेश पंकज की तीन कविताएं 53

बीज : कविता/ग़ज़लें

बंधु पुष्कर की चार कविताएं 55
रश्मि गुप्ता की छह ग़ज़लें 57

खंड-4 : मुद्दा/डायरी/संस्मरण

मणिपुर की अफीम... : योगिता यादव 59
रोने की औपचारिकता... : शैलेंद्र शांत 62
जनकवि नागार्जुन से एक... : शैलेंद्र शैल 67

खंड-5 : मूल्यांकन

समझ और संवेदना को... : अवधेश प्रीत 70
यात्राओं में होना यातना... : सूरज पालीवाल 73
जर्द रंगों की यायावर... : हरीदास व्यास 77
अपने-अपने पिता : अनूप सेठी 79
साल चौरासी के जख्म : विजया सती 82
स्वतंत्रचेता स्त्री के मन... : पराग मंदले 84

खंड-6 : स्थाई स्तंभ

कल्पित कथन/देख कबीरा रोया/प्रति संसार

पुरस्कार ही अब आलोचना है : कृष्ण कल्पित 88
घमंडीलाल का घमंडी मीडिया : मुकेश कुमार 91
सर्जनात्मकता ही सत्य है : अर्पण कुमार 92

खंड-7 खबरनामा

नरेश सक्सेना को राही... : उषा ठाकुर 95

आवरण
बंशी लाल परमार

रेखा चित्र
निर्देश निधि/बलविंद्र सैली

...कृपया सीट बेल्ट बांध लें

जीवन है तो कष्ट भी होगा ही होगा। यदि जीवन के होने में कोई उद्देश्य है तो कष्ट के पीछे भी कोई न कोई उद्देश्य होगा। जरूरत इस उद्देश्य को समझने की है। फिर सब कुछ स्थिर हो जाता है। मेरा मानना है कि सबसे जरूरी है खुद से, खुद की क्षमताओं से विश्वास का न टूटना। अतीत के कड़वे अनुभव, गलतियां, गलत निर्णय पश्चताप करने के लिए नहीं बल्कि दोबारा न दोहराने की संकल्प सिद्धि का जरिया मात्र है। यदि हम ऐसा कर सकें तो वर्तमान का संताप नष्ट करने और भविष्य के प्रति आशंकाओं और निराशाओं को चीरने का मार्ग अंततः मिल ही जाता है। यश-अपयश, सुख और दुख, उत्थान और पतन के संयोग से यह जीवन है।

'पाखी' की उड़ान ने पंद्रह बरस पूरे कर लिए हैं। सितंबर 2008 को हिंदी साहित्याकाश में इसने पहली उड़ान भरी थी जो आज तक हिचकोले लेते जारी है। जिस तरह खराब मौसम की जद में आए विमान की परिचारिका घोषणा करती है-'मौसम खराब होने का संकेत चिह्न जारी कर दिया गया है कृपया सीट बेल्ट बांध लें', ठीक उसी प्रकार बीते पंद्रह वर्षों के दौरान 'पाखी' को लेकर मेरा मस्तिष्क चेतावनी जारी करता रहा है कि अब इस उड़ान को धरती पर उतार दिया जाए लेकिन दिल है कि मानता नहीं। इस तरह से पंद्रह बरस कट गए। आगे क्या होगा कहना हाल-फिलहाल कठिन है। जिस उमंग और उत्साह से पहली उड़ान का टेक ऑफ हुआ था, समय-काल और परिस्थितियों ने उसे हवा करने का काम कर दिखाया है। 'सोनेट 19' में शेक्सपियर समय की व्याख्या कुछ यूं करते हैं-

Devouring Time, blunt thou the lion's paws,
And make the earth devour her own sweet brood;
Pluck the keen teeth from the fierce tiger's jaws,
And burn the long-lived Phoenix in her blood;
Make glad and sorry seasons as thou fleets,
And do whate'er thou wilt, swift-footed Time,
To the wide world and all her fading sweets;
But I forbid thee one more heinous crime:
O, carve not with thy hours my love's fair brow,
Nor draw no lines there with thine antique pen!
Him in thy course untainted do allow
For beauty's pattern to succeeding men.
Yet do thy worst, old Time! Despite thy wrong,
My love shall in my verse ever live young.

सारांश में शेक्सपियर वक्त की ताकत को बयान करते हुए बताते हैं कि किस प्रकार वक्त ताकतवर को और कोमल को भी, शेर के जबड़े को भी और चीते के नाखूनों को भी धारहीन बना डालता है। वह वक्त से कहते हैं जो चाहे वह कर लेकिन आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक बनने की संभावना रखने वाले यौवन को बर्बाद मत कर।

तुलसीदास ने वक्त की ताकत का वर्णन करते हुए कहा है-

तुलसी नर का क्या बड़ा, समय बड़ा बलवान
भीलां लूटी गोपियां, वही अर्जुन वही बाण।

'पाखी' की उड़ान की हिचकोले खाने और जैसा कभी-कभी मुझे लगता है जमीन पर धड़ाम से आ गिरने का समय, समय के बदलते मिजाज चलते नजदीक आ गया है। यह मैं वर्तमान परिस्थितियों के मद्देनजर कह रहा हूं। ऐसा हो भी सकता है, नहीं भी। समय का मिजाज यदि फिर से बदल गया तो यह भी संभव है कि 'पाखी' न केवल अपनी उड़ान जारी रखे बल्कि नई ऊंचाइयों को छुए। बहरहाल, पंद्रह बरस की यात्रा कुल मिलाकर यदि बहुत शानदार नहीं तो भी ठीक-ठाक तो कही ही जा सकती है।

हिंदी साहित्य संसार से असल परिचय 'पाखी' के कारण ही संभव हो पाया। बीते पंद्रह वर्षों के दौरान कई मीठे तो कुछ खट्टे अनुभव भी हुए। बहुत सारे भ्रम टूटे, कई प्रतिभाएं खंडित भी हुईं तो पत्रकार से कहानीकार बनने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ। 'पाखी' के प्रकाशन की मेरी योजना का पुरजोर समर्थन 'दि संडे पोस्ट' साप्ताहिक के कार्यकारी संपादक प्रेम भारद्वाज ने किया था और सलाह भी दी थी कि हमें 'हंस' के संपादक राजेंद्र यादव से इस विषय पर बात करनी चाहिए। राजेंद्र जी ने हमें जमकर हतोत्साहित किया जिससे हमारा इरादा और मजबूत हो गया कि अब तो जरूर इस मैदान में उतरेंगे ही उतरेंगे।